बहारे तहरीर

14

अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

बहारे तहरीर

14

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

SABIYA
VIRTUAL PUBLICATION

بسم اللہ الرحمن الرحیم
اللہ کے نام سے شروع جو نہایت مہربان، رحمت والا ہے۔

Contents

प्यार हो जाए

अपने आप को ऐसा बनाइये, ऐसा लेहजा इख्तेयार किजीये की लोगों को आपसे प्यार हो जाए।

इसका ये मतलब नहीं की आप हर किसी को खुश करने के लिये हर तमीज़ को भूल जाएं बल्कि हम ये कहना चाहते हैं की जो वाक़यी अच्छे हैं, वो भी आपके लेहजे की वजह से आपके दुश्मन ना बन जाएं।

किसी का क़ौल है :

الكلمة اذا خرجت من القلب دخلت فى القلب و اذا خرجت من اللسان لم تتجاوز الآذان

यानी बात जब दिल से निकलती है तो दिल को लगती है और जब हलक़ और जुबान से खारिज होती है तो कानो से टकरा कर वापस लौट आती है।

दिल के ज़रिये होते हुये अपनी बातो को बाहर लाइये ताकी किसी के दिल पे लगे और चाहे दुश्मन हो पर आपकी दुश्मनी को ही याद रखने पर मजबूर हो जाए।

हमें हर दिन पेश आने वाले मामलात और कयी तरह के हादसात जो हम देखते हैं, सबसे इबरत लेनी चाहिये और हर दिन खुद को बहतर बनाने की कोशिश करनी चाहिये।

खुद पर काम करते रहें, इसी दरमियान के आप दुसरे काम करें।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

निस्बत काम आयेगी

इल्म ज़रूरी है, अमल ज़रूरी है इनका किसी को इंकार नहीं।

दीन के लिये आप का काम और क़ौम के लिये ख़िदमात भी क़ाबिले ज़िक्र हैं पर इन सब के बावजूद अल्लाह वालों से निस्बत एक अलग शय है।
ये निस्बत ऐसी शय है कि ख़त्म नहीं होती, कोई खत्म कर दे तो भी नाम बाक़ी रहता है।
अल्लाह वालों से निस्बत रखने वाले तो पाते ही हैं, निस्बत तोड़ देने वाले भी पाते हैं।
रखने वाले इज़्ज़त और बरकत पाते हैं, तोड़ देने वाले ज़िल्लत और ज़हमत पाते हैं।

अल्लाह त'आला ने फ़रमाया कि तक़वा इख़्तियार करो फिर फ़रमाया कि सच्चों के साथ हो जाओ।

ये हम इन्हीं सच्चों से निस्बत की बात कर रहे हैं।

इनसे निस्बत जोड़े रखिये, ये ग़ैरे खुदा ज़रूर हैं पर खुदा की तरफ ले जाने वाले हैं।

इनकी निस्बत वो दे जाएगी जो पूरी ज़िंदगी की जिद्दो जहद में ना मिल सके।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

मुहब्बत और फक़ीरी

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मुफग्गल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु फरमाते हैं कि एक शख्स ने नबी -ए- करीम सल्लल्लाहो त'आला अलैही वसल्लम की खिदमत में अर्ज़ किया :

या रसूलअल्लाह! अल्लाह की क़सम! बेशक़ मै आपसे मुहब्बत करता हूँ।

आप सल्लल्लाहो त'आला अलैही वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि देखो! देख लो! क्या कह रहे हो?

उसने अर्ज़ किया : बाखुदा मै आपसे मुहब्बत करता हूँ, तीन मरतबा कहा।

नबी -ए- करीम सल्लल्लाहो त'आला अलैही वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अगर वाक़यी तुझे मुझ से मुहब्बत है तो फक़र (फक़ीरी) के लिये ज़िरह तैय्यार कर लो क्योंकि मुझसे मुहब्बत करने वाले की तरफ़ फक़र इस सैलाब से भी ज़्यादा तेज़ आता है जो अपनी मंजिल की तरफ़ बढ़ रहा हो।

(رواہ الترمذی، حدیث حسن)

हुज़ूर की मुहब्बत में फक़ीरी पाने वाले भी ज़माने के ताजदारों से बेहतर हैं बल्कि कोई मुक़ाबला ही नहीं।

आखिर ये तो देखिये कि किस की मुहब्बत में फक़र मिला है।

बेशक़ मुहब्बत क़ुरबानी का तक़ाज़ा करती है और जान भी दे देना इस में आम सी बात है फिर मालो दौलत किस गली में बसती है।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

आज रात मेरी चारपाई भी सूनी ना होती।

एक रात हज़रते उमर फ़ारूक़ मदीने की गलियों का चक्कर लगा रहे थे जैसा कि आप अक्सर रात को गश्त करते थे।

एक दफ़ा आप एक औरत के दरवाज़े से गुज़रे जो दरवाज़ा बंद किये अंदर कुछ अशआर पढ़ रही थी जिन का मफ़हूम कुछ यूँ है :

"ये रात तवील हो चुकी है और इस के सितारे अपनी बुलंदी को पहुँच चुके हैं और मुझे इस बात ने बेदार कर रखा है कि दिल बहलाने के लिये मेरा दोस्त नहीं,
अल्लाह की क़सम, अगर उस की ज़ात ना होती तो इस चारपाई से इसके पहलू हरकत करते,
मै रात गुज़ारती ग़फ़लत में, ना ताज्जुब करती और ना किसी पे लानत करने वाली होती,
बातिन लतीफ़ होता और बिस्तर उसको ना घेरता,
वो मुझसे मुख्तलफ़ अंदाज़ में दिल्लगी करता गोया रात की तारीकी में उस का अबरू चाँद की तरह ज़ाहिर हुआ, इसे खुश करता जो उसके क़रीब खेलता,
वो मुझे अपनी मुहब्बत में इताब (शिद्दत से मुहब्बत) करता और मै उसे इनाब करती लेकिन मै रक़ीब और निगरान से डरती हूँ जो हमारे नफ्सों की निगरानी करता है, जिसका कातिब कभी सुस्त नहीं होता और कभी उस से कोताही नहीं होती।"

(تفسیر در منثور، ج1، ص703، ملخصًا)

हज़रते उमर ने अपनी बेटी से मुशावरत के बाद जंग में जाने वाले फौजियों की अपने घरों में वापस आने की मुद्दत मुअय्यन की कि ज़्यादा से ज़्यादा चार महीने तक फौजी रह सकता है उस के बाद छुट्टी ले कर अपने घर आ जाए और इस औरत के शौहर को भी वापस बुलवा लिया।

आज भी ये अशआर पढ़े जाते हैं, पढ़ने वालों में लड़के और लड़कियाँ दोनों शामिल हैं पर सुनने वाला कोई नहीं, अगर सुन ले तो समझने से क़ासिर है।

अगर्चे इन अल्फ़ाज़ के साथ नहीं पर ना जाने कितने ही ऐसे हैं कि इसी अकेलेपन को महसूस करते हैं पर चाह कर अपने दोस्त का क़ुर्ब हासिल नहीं कर सकते।

निकाह में बिला किसी खास वजह के ताख़ीर की जाती है,

औलाद को मजबूर किया जाता है कि मुआशरे के उसूलों के नीचे दबे लड़के और लड़कियाँ अपनी हसरतों के साथ इस अहसास को भी दबाये रखते हैं,

कुछ कहना तो दूर, कुछ सोचने पर भी पाबंदियाँ लगने लगी हैं, पैसों के लिये कोई सालों अपनी बीवी को अकेले छोड़ कर परदेस में रहता है,

कोई माल की वजह से बीवी से ही महरूम कर दिया जाता है,

किसी के लिये निकाह मुम्किन हो कर ना-मुम्किन जैसा है तो किसी को उम्मीद भी अब नज़र नहीं आती।

काश कि लोग समझें कि ये ऐसी ज़रूरत है कि जिस का इंकार असल में फ़ितरत की मुख़ालिफ़त होगी।

हम इशारतन ही कहते हैं कि आसानियाँ पैदा करें, आसानी से मिलने दें, जियें और जीने दें ताकि किसी की साँसों के साथ ऐसे अशआर बुलंद ना हो वरना जब किसी को तकलीफ होती है तो ये सिर्फ उसी के साथ खास नहीं होती बल्कि इस का असर हमारी सोच से ज़्यादा दूर तक असर करता है।

अल्लाह त'आला हमारे हाल पे रहम फ़रमाये, बेशक वो बड़ा रहीम है।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

बुज़ुर्गों का उर्स मनाना अहादीस से साबित है

सुन्नी जो बुज़ुर्गों का उर्स मनाते हैं यानी हर साल उनके मज़ारात पे हाज़िर होते हैं, सलाम पेश करते हैं और उनकी तहसीन करते हैं, ये सब नबिये करीम सल्लल्लाहो त'आला अलैही वसल्लम और उनके सहाबा से साबित है।

इमाम वाक़िदी (मुतवफ्फा 207 हिजरी) का बयान है की :

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो त'आला अलैही वसल्लम हर साल शुहदा -ए- उहुद की क़ब्रो की ज़ियारत करते, जब आप घाटी में दाखिल होते तो बा आवाज -ए- बुलंद फरमाते की अस्सलामु अलैकुम क्यूँकी तुमने सब्र किया पस आखिरत का घर क्या ही अच्छा है फिर हज़रते अबू बकर सिद्दिक़ रदिअल्लाहो त'आला अन्हो हर साल इसी तरह करते थे फिर हज़रते उमर रदिअल्लाहो त'आला अन्हो हर साल इसी तरह करते थे फिर हज़रते उस्मान रदिअल्लाहो त'आला अन्हो।

(کتاب المغازی، ج1، ص313، دلائل النبوۃ، ج3، ص308)

और उर्स की लफ्ज़ी असल ये है की हज़रते अबू हुरैराह रदिअल्लाहो त'आला अन्हो बयान करते हैं की क़ब्र में मुन्कर नकीर आ कर ऐसा सवाल करते हैं और पूछते हैं की तुम इस शख्स के बारे में क्या कहा करते थे और जब मुर्दा कह देता है की ये अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं और कलिमा -ए- शहादत पढ़ता है तो उसकी क़ब्र वसी और मुनव्वर कर दी जाती है और उस्से कहते हैं की उस उरूस (दूल्हे) की तरह सो जाओ जिस को उसके अहल में सबसे ज़्यादा महबूब के सिवा कोई बेदार नहीं करता।

(سنن الترمذی، رقم1073)

इस हदीस में मोमिन के लिये उरूस का लफ़्ज़ वारिद है और उरूस का लफ़्ज़ उर्स से माखूज़ है और ये उर्स की लफ़्ज़ी असल है।

उर्स की हक़ीक़त ये है की साल के साल सालिहीन और बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात की ज़ियारत की जाए उन पर सलाम पेश किया जाए और उनकी तारीफ़ व तौसीफ़ के कलिमात कहे जाएं और इतनी मिक़्दार सुन्नत है और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ कर और सदक़ा व खैरात का ज़खीरा सवाब पहुँचाना दीगर अहादीस -ए- सहीहा से साबित है और उनके वसीले से दुआ करना और उनसे अपनी हाजत में अल्लाह से दुआ करने और शफ़ाअत करने की

दरख्वास्त करना इस का सुबूत इमाम तबरानी की इस हदीस से है की जिस में हज़रते उस्मान बिन हनीफ़ ने एक शख्स को नबी सल्लल्लाहो त'आला अलैही वसल्लम के वसीले से दुआ करने और आपसे शफ़ाअत की दरख्वास्त करने की हिदायत की,

ये हदीस सहीह है।

(المعجم الصغیر، ج1، ص184، حافظ منذری متوفی 656ھ نے بھی اس حدیث کو صحیح کہا ہے دیکھیں الترغیب والترہیب، ج1، ص471 تا476، ابن تیمیہ نے بھی اس حدیث کو صحیح کہا ہے دیکھوں فتاوی ابن تیمیہ، ج1، ص273، 274)

इसी तरह इमाम इब्ने अबी शयबा ने रिवायत किया है की हज़रते उमर रदिअल्लाहो त'आला अन्हो के ज़माने में एक बार क़हत पड़ गया तो हज़रते बिलाल बिन हारिस रदिअल्लाहो त'आला अन्हो ने नबी सल्लल्लाहो त'आला अलैही वसल्लम की क़ब्र मुबारक पर हाज़िर हो कर अर्ज़ किया या रसूलअल्लाह सल्लल्लाहो त'आला अलैही वसल्लम! उम्मत के लिये बारिश की दुआ किजीये क्यूँकी वो हलाक हो रहे हैं (अल हदीस)

(المصنف، ج12، ص32، حافظ ابن حجر عسقلانی نے اس حدیث کے متعلق فرمایا کہ اس کی سند صحیح ہے، دیکھیں فتح الباری، ج12، ص495، 496)

इन तमाम बातो से साबित हुआ की उर्स मनाना कोई बिद्अत नहीं और ना ही नाजाएज़ है बल्कि क़ुरआनो सुन्नत से साबित है।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

क्या बिना सोहबत वलीमा नहीं होता?

ये सुनने को अक्सर मिलता है की अगर शबे ज़ुफ़ाफ़ (शादी की पहली रात) में सोहबत ना की जाए तो वलीमा नहीं होता और फिर सहीह मस'अला मालूम ना होने की वजह से कई तरह की गलत फहमीयां पैदा हो जाती हैं जैसा की आप अभी पढ़ेंगे।

हज़रत अल्लमा मुफ्ती वक़ारुद्दीन क़ादरी रहिमहुल्लाहू त'आला से सवाल किया गया की किसी लड़की का निकाह अय्याम -ए- हैज़ (यानी हैज़ के दिनो) में हुआ और अभी वो पाक नहीं हुयी थी के वलीमा कर दिया गया फिर जब पाक हुयी तो लड़के वालो ने दोबारा मुख्तसर दावते वलिमा का एह्तिमाम किया, अब लड़के वाले लड़की वालो से ये कहते हैं की पहली दावते वलिमा का खर्च तुम अदा करो,

क़ुरआनो हदीस की रौशनी में वज़ाहत फरमायें के लड़के वालो का मुतालबा दुरुस्त है या नहीं?

आप रहिमहुल्लाहू त'आला लिखते हैं की हालाते हैज़ में निकाह जाएज़ है और अगर ऐसा हो गया तो मिया बीवी तन्हाई में कुछ वक़्त गुज़ार लें अगर्चे हुक़ूक़ -ए- ज़ौजियत अदा ना करें (सोहबत ना करें) तो वलिमा भी हो जाएगा, वलिमा को दोबारा करने की ज़रूरत ना थी और इसके खर्चे का मुतालबा लड़की वालो से किसी तरह नहीं किया जा सकता।

(وقار الفتاوی، ج3، ص120)

मालूम हुआ की अगर सोहबत ना करें तो भी वलिमा हो जाता है।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

मैने और गुनाह किये हैं

हुज़ूर सल्लल्लाहो त'आला अलैही वसल्लम ने इरशाद फरमाया की सबसे पहले जो जन्नत में दाखिल होगा मैं उसे भी जानता हूँ और जो सबसे आखिर में दोज़ख से निकाला जाएगा उसे भी जानता हूँ।

क़ियामत के दिन एक आदमी को लाया जाएगा और कहा जाएगा की इसके सगीरा गुनाह इसके सामने पेश करो और कबीरा गुनाह इससे छुपा के रखो फिर उससे कहा जाएगा की फूलां फूलां काम किया तो वो इस का इक़रार करेगा और साथ ही कबीरा गुनाहो से डर रहा होगा तो कहा जाएगा की इसे इसकी हर बुराई के बदले नेकी अता कर दो।

वो फौरन कहेगा की मेरे कुछ और गुनाह भी हैं जो यहाँ मुझे दिखायी नहीं दे रहे।

हज़रत अबुज़र रदिअल्लाहो त'आला अन्हो फरमाते हैं की रसूले अकरम सल्लल्लाहो त'आला अलैही वसल्लम ने ये फरमाया तो मैने आपको मुस्कुराते हुये देखा हत्ता की आपकी दाढें ज़ाहिर हो गयी।

(الانوار فی شمائل النبی المختار موسوم به شمائل بغوی)

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

पीछे इस इमाम के कहना कुफ्र है!

क़ुत्बे मदीना, हज़रते शैख ज़िआउद्दीन मदनी रहिमहुल्लाहू त'आला से नमाज़ के बारे में सवाल किया जाता के वहाबी इमाम के पीछे पढ़ी जाने वाली नमाज़ हो जाएगी या नहीं?

आप फरमाते की अगर इमाम गुस्ताखे रसूल हो और मुक़्तदी को ये बात अच्छी तरह पता हो तो मेरे नज़दीक (इसके बावजूद) "पीछे इस इमाम के" कहना कुफ्र है।

ये भी फरमाया करते की हिजाज़े मुक़द्दस में नमाज़ की इमामत का मस'अला नया नहीं है बल्कि मुसलमानो पर नमाज़ की तंगी का ये चौथा दौर है।

पहला दौर वो था जब अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदूना उस्माने गनी रदिअल्लाहो त'आला अन्हो को शहीद किया गया तो अक्सर सहाबा ने बल्वाइयो के मुक़र्रर कर्दा इमाम के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ी उस वक़्त तक की हज़रते अली का ज़ुहूर हुआ।

दुसरा दौर यज़ीद मलऊन का आया जिसने इमामे आली मक़ाम को बड़ी बेदर्दी से ज़िबह करवाया, उस वक़्त भी अक्सर सहाबा और ताबयिन ने उनके मुक़र्रर कर्दा इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने को बुरा जाना।

तीसरा दौर हज्जाज बिन युसुफ का था, वो बड़ा ज़ालिम था, रसूलुल्लाह के सहाबा को अपने सामने ज़िबह करवाने से भी गुरेज़ ना किया तो उस वक़्त भी हुकुमत के मुक़र्रर कर्दा इमामो के पीछे अक्सर ने नमाज़ ना पढ़ी।

वो लोग ना अक़ीदे के गंदे थे ना अमल के, वो ज़ालिमो और फासिक़ो के मुक़र्रर कर्दा थे और वो किसी को मज़बूर भी नहीं करते थे जो उन के पीछे नमाज़ पढ़े और जो ना पढ़े उस से किसी क़िस्म का मुवाखज़ा ना करते।

और अब ये चौथा दौर नजदीयो का है, ये आमाल के भी बुरे और अक़ीदे के भी गंदे हैं, और ये मजबूर भी करते हैं की हमारे मुक़र्रर कर्दा इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ो और जो इन के पीछे नमाज़ नहीं पढ़ते उन्हें तरह तरह से तंग करते हैं हालाँकि नमाज़ का ताल्लुक़ दिल से है, अगर किसी का दिल ही इमाम की तरफ़ से मुतमईन नहीं तो उसकी नमाज़ इमाम के पीछे कैसे हो जाएगी?

जो उनके अक़ाइद पर इत्तेला रखते हैं उनकी नमाज़ तो नहीं होगी और जिनको उनके अक़ाइद की खबर नहीं वो अल्लाह और रसूल की मुहब्बत में के ये काबा -ए- मुअज़्ज़मा

और मस्जिदे नबवी शरीफ़ के इमाम हैं, इस अक़ीदत में उनके पीछे नमाज़ पढ़ लेते हैं, अल्लाह त'आला से उम्मीद है की उनकी नमाज़ें क़बूल फरमा लेगा, वही क़ादिर और क़बूल फरमाने वाला है।

(سیدی ضیاء الدین احمد قادری رحمہ اللہ تعالی، مرتب مولانا محمد عارف ضیائی)

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

दिल थाम के पढ़ें

सऊदीआ अरब की एक अदालत में एक मुक़द्दीमे का फैसला सुनाया गया और क़ाज़ी खुद रोने लगा, साथ में जितने लोग मौजूद थे सब की आँखें भीग गयी।

आइये देखते हैं मुक़द्दीमा क्या था।

ये वाक़िया एक शख्स का है जो एक गाँव में रहता था, उसकी एक 90 साल की बूढ़ी माँ थी जो उसके लिये उसकी कायेनात थी ये शख्स भी बूढ़ा हो चुका था और गुरबत में दीन बसर हो रहे थे ये अपनी माँ की दीन रात देख भाल करता और माँ को भी इस बेटे से बहुत ज़्यादा मुहब्बत थी और वो सुबह शाम इसके लिये दुआएँ करते ना थकती।

ये शख्स अपनी माँ की खिदमत में सुकून और आखिरत का अच्छा घर देखता था।

सब कुछ ठीक जा रहा था की दुसरा बेटा जो शहर में रहता था वो अपनी माँ को लेने आ गया और उसका मुतालबा था की इतने अर्से तुमने माँ को रखा, अब मैं अपने पास रखूँगा।

इस शख्स के लिये ये ऐसा था की जैसे किसी ने जान से बढ़ कर कुछ माँग लिया हो, इसे अपनी दुनिया अंधेरी होती नज़र आ रही थी, इसने भाई को बहुत समझाया के मैं माँ के बिना नही रह सकूँगा पर उसने ना मानी और जिद्द पे अड़ा रहा और ये मामला पंचायत फिर हल ना होने पर अदालत तक पहुँच गया।

क़ाज़ी ने पहले कोशिश की के दोनो के बीच सुलह हो जाए पर ऐसा ना हुआ तो क़ाज़ी ने माँ को अदालत में लाने का कहा और जब उसे लाया गया तो क़ाज़ी ने उससे पुछा की आपको किस के साथ रहना है?

वो बूढ़ी मा अपने दामन से आँखो को खुश्क कर के कहने लगी के मेरे लिये ये फ़ैसला करना दुश्वार हैं और कैसे मैं एक बच्चे के हक़ में दुसरे के खिलाफ़ फ़ैसला कर सकती हूँ, मेरे लिये दोनो बराबर हैं।

क़ाज़ी ने उस शख्स की माली हालत, कमज़ोरी और उसके भाई की हालत और खुशहाली के असबाब को देखते हुये छोटे भाई के हक़ में फ़ैसला सुना दिया।

क़ाज़ी के फ़ैसला सुनते ही वो शख्स दर्दनाक चीख़ो के साथ रोने लगा और अदालत उसकी आवाज़ से गूँज उठी उसके बिलक बिलक के रोने से क़ाज़ी साहिब और कमरे में मौजूद लोग भी आँसूओ को रोक ना सके।

क़ाज़ी साहिब रोते हुये कुर्सी से उठ गये और कमरे के लोग उस शख्स से गले लग के रोए।

जब उस शख्स ने अपनी माँ के क़दमो को बोसा देते हुये रुखसत होने की इजाज़त चाही तो छोटे भाई की भी चीखें निकल गयी।

ये वाक़िया पढ़ कर गौर करे की जिन बूढ़ी माँओ को ओल्ड हाउस वगैरा में छोड़ दिया जाता है या उन्हें अलग कर दिया जाता है, अगर उन्होने ये पढ़ लिया तो उन पर क्या गुज़रेगी।

अपनी माँ को फरामोश कर के बीवी के हर जाएज़ नाजाएज़ हुक्म की फरमाबर्दारी करने वाले इसे पढ़ें और गौर करें की अल्लाह की अता कर्दा कितनी बड़ी नेअमत को वो फरामोश कर रहे हैं।

खुश नसीब है वो शख्स जिसकी माँ जिंदा है और उसे खबर है की ये कितनी बड़ी नेअमत मेरे पास मौजूद है।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

एक वली की 3 निशानियाँ

हज़रते ख्वाजा बहाउद्दीन नक़्शबन्द रहीमहुल्लाह त'आला (मुतवफ्फा 792 हिजरी) ने एक वली की जो तीन अलामतें बयान फरमायी हैं, वो ये हैं :

سہ نشاں بود ولی راز نخست دان بہ معنی

کہ چوں روئے او بہ بینی دل تو بدو گراید

हक़ीक़ी वली की तीन निशानियाँ हैं, पहली ये कि तू उसके चेहरे को देखे तो तेरा दिल उसका गरवीदा हो जाए (यानी उसे दोबारा देखने की आरज़ू तेरे दिल में अंगड़ाईयाँ लेने लगे।)

دوم آنکہ در مجالس چو سخن کند بہ معنی

ہمہ راز ہستی خود بہ حدیث می رباید

दूसरी अलामत ये है कि जब वो मजलिस में इसरार व हक़ाइक़ बयान करे तो उसकी बातें सुनने वालों के दिल मोह ले और सुनते रहने को जी चाहे।

سوم آں بود بہ معنی ولی اخص عالم

کہ ز ہیچ عضو او را حرکات بد نیاید

हक़ीक़त में जहान के खास तरीन वली की तीसरी निशानी ये है कि उसके आज़ा से नशाइस्ता हरकात सरज़द ना हो (गोया उसकी खिलवत व जलवत में किसी किस्म का तज़ाद ना हो)

[वो जिस तरह लोगों के दरमियान बा-अमल हो उस से ज़्यादा अकेले में बा-अमल हो]

(مقدمہ کلیات جامی از ہاشم رضا، ص 170)

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

सुल्तान मलिक शाह, वज़ीर निज़ामुल मुल्क और तालीमी इदारे

सलजूक़ी बादशाहों के नामवर वज़ीर निज़ामुल मुल्क ने जब सल्तनत के तूलो अर्द में तालीमी इदारों का जाल बिछा दिया और तालीम के लिये इतनी बड़ी रक़म खर्च की कि तलबा (पढ़ने वाले) किताबों की फराहमी और दूसरे खर्चों से बे नियाज़ हो गये तो सुल्तान मलिक शाह ने फरामया कि वज़ीरे आज़म ने इतना माल इस में खर्च किया है कि इतनी रक़म से जंग के लिये पूरा लश्कर तैय्यार हो सकता है, आखिर इतना मालो ज़र जो आपने इन पर लगाया है तो इस में आप क्या देखते हैं?

वज़ीर निज़ामुल मलिक की आँखों में आँसू आ गये और कहने लगे :

आलिजाह! मैं तो बूढ़ा हो गया हूँ, अगर नीलाम किया जाऊँ तो 5 दीनार से ज़्यादा बोली ना हो, आप एक नौजवान तुर्क हैं ताहम मुझे उम्मीद नहीं कि 30 दिरहम से ज़्यादा आपकी भी कीमत आये, इस पर भी खुदा ने बादशाह बनाया है। बात ये है कि ममालिक फतह करने के लिये आप जो लश्कर भर्ती करना चाहते हैं उनकी तलवारें ज़्यादा से ज़्यादा 2 ग़ज़ की होंगी और उनके तीर 300 क़दम से ज़्यादा दूर नहीं जा सकेंगे लेकिन मैं इन तालीमी इदारों में जो फौज तैय्यार कर रहा हूँ उनके तीर फर्श से अर्श तक जाएंगे।

(کار آمد تراشے، ص359)

क़ौमों के उरूज और ज़वाल का एक राज़ तालीम में पोशीदा है

तालीम ही वो शय है कि जिसके ज़रिये इंसान को शऊर अता किया जाता है, उसकी फिक्र वसी होती है, उसके ज़हन में पूरी दुनिया बसी होती है अगर्चे वो किसी कोने में बैठा हो।

हमें बहुत ज़्यादा ज़रूरत है कि हम तालीमी निज़ाम पर खास तवज्जोह दें, सिर्फ रस्मी पढ़ाई या सनद नहीं बल्कि ज़िम्मेदारी के साथ इस काम को अंजाम दें और जो इस काम में अपने शबो रोज़ गुज़ार रहे हैं उनकी जहाँ तक हो सके ख़िदमत करें।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

बच्चों को आजादी दीजिये

मुहतरम वालिदैन! आप ने कभी ना कभी ये जुमला ज़रूर सुना होगा "रोक टोक की ज़्यादती बच्चों को बागी बना देती है" ये एक हक़ीक़त है कि जिस उम्र में बच्चों का ज़हन आज़ादी चाहता है उस उम्र में अगर बच्चों की आज़ादी छीन ली जाए तो उन की शख़्सिय्यत पर मनफी असरात मुरत्तब होते हैं और जब बच्चे उन मनफी असरात के साये में परवान चढ़ते हैं तो नतीजतन अहसासे कमतरी का शिकार हो जाते हैं उन की खुद एतिमादी को नुकसान पहूँचता है। मुश्किल हालात से निपटने और फैसला करने की सलाहिय्यत ख़त्म हो जाती है ज़िन्दगी की हर मरहले पर उन्हें गलती का खौफ लाहिक़ रहता है और ये तमाम चीज़ें बच्चों का मुस्तक़बिल तारीक कर देती हैं।

याद रखें! दुरुस्त तरबियत ही बच्चे के रौशन मुस्तक़बिल की ज़मानत होती है लिहाज़ा जिस वक़्त तरबियत मराहल में हो उन्हें कुछ चीज़ों की आज़ादी दीजिये :

(1) तरबियत की आज़ादी :

अगर आप के बच्चे कोई नया और अच्छा काम करते हैं तो उन्हें रोक कर उन की सलाहिय्यत को जंग आलूद मत कीजिये बल्कि अपने मुफीद मश्वरों और तजुर्बात की रौशनी में उन की मदद कीजिये।

(2) खौफ़ से आज़ादी :

याद रखिये! बे जा खौफ़ बच्चों में बुज़दिली और कम हिम्मती पैदा करता है अगर आप बच्चों पर ज़ोर ज़बरदस्ती करेंगे तो उन में खौफ पैदा होगा वो आप से बातें मश्वरा करते हुये घबरायेंगे या फिर वो ज़िद्दी हो जाएंगे। क्योंकि ज़रूरत से ज़्यादा डाँट या मार पीट बच्चे के ज़हन में खौफ पैदा कर देती है अपने रवैये में नरमी पैदा कीजिये। बच्चों को अपनी खामियाँ तलाश करने का मौक़ा दीजिये इम्तिहानात और दीग़र अहम कामों में नाकामी की सूरत में उन्हें डाँटने या मारने की नहीं बल्कि उन की हिम्मत बढ़ाने और हौसला अफ़ज़ाई की ज़रूरत होती है।

(3) गुफ्तगू की आज़ादी :

अदम तवज्जो की वजह से बच्चे और आप के दरमियान (Communication) गेप आ जाता है जिस की वजह से बच्चे आप से हिचकिचाहट महसूस करता है आप बच्चे

को ऐसा माहौल फ़राहम करें कि बच्चे आप को अपना खैर ख़्वाह समझते हुये हर मौज़ू पर खुल कर बात कर सकें।

(4) मश्वरे की आज़ादी :

अगर आप बच्चे में क़ुव्वते फैसला मज़बूत करना चाहते हैं तो बच्चे को मश्वरा देने की भी आज़ादी दें ताकि उसके अंदर राय क़ाइम करने की सलाहियत पैदा हो।

(5) खेल की आज़ादी :

अक्सर वालिदैन बच्चे को चोट लगने के डर से खेलने से रोकते हैं जबकि चोट ही बच्चे को एहतियात करना सिखाती है बच्चों को ऐसा माहौल फ़राहम किया जाए कि उन्हें बड़ी और गहरी चोट ना लगे हल्की फुल्की खराश या ठोकर लग कर गिर जाना उस की जिस्मानी मज़बूती और शख़्शी तामीर का जरिया है।

मुहतरम वालिदैन!

मुन्दरिजा बाला नक़ात को सामने रखते हुये बच्चे की तरबियत में आज़ादी का हिस्सा भी शामिल कीजिये ताकि बच्चे की शख़्सिय्यत की तामीर हो। उस का मुस्तक़बिल तारीक के बजाए ताबनाक हो और वो मुआशरे में कामयाब फर्द की हैसिय्यत से ज़िंदगी गुज़ार सके।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

उमर दा पहला नम्बर

पाकिस्तान के एक मुक़र्रिर ने अपने एक बयान में कहा कि हज़रते अली रदीअल्लाहु त'आला अन्हु के लिये "अली दा पहला नम्बर" कहना अगर ग़लत है तो फिर आला हजरत रहीमहुल्लाह त'आला पर भी फ़तवा लगाया जाए क्योंकि उन्होंने हज़रते अली की 18 अव्वलिय्यत का ज़िक्र किया है यानी जिन में अली दा पहला नम्बर है।

हम कहते हैं कि फिर इस में हज़रते अली रदीअल्लाहु त'आला अन्हु की ही क्या तख्सीस? आप सिर्फ 18 अव्वलिय्यत की बात कर रहे हैं जबकि हज़रते उमर रदीअल्लाहु त'आला अन्हु की 50 के क़रीब अव्वलिय्यत किताबों में मौजूद है और फिर इसी तरह हज़रते उस्मान गनी रदीअल्लाहु त'आला अन्हु की अव्वलिय्यत भी हैं लेकिन इसका ये मतलब तो नहीं कि हम उमर दा पहला नम्बर या उस्मान दा पहला नंबर के नारे लगाना शुरू कर दें।

हम सब जानते हैं कि ये अली दा पहला नंबर का नारा किस तनाज़ुर में लगाया जाता है फिर इसकी राह निकालने का क्या मतलब समझा जाए?

बात है खिलाफत की तो फिर यहाँ यही सहीह है कि अली दा पहला नंबर नहीं बल्कि चौथा नंबर है।

अल्लाह त'आला हमें फ़ितनों से महफ़ूज़ रखे।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

प्यार किया फिर सब्र किया और फिर हज़रते अली ने शादी करवा दी।

हज़रते अली रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की एक बांदी थी और एक मुअज़्ज़िन भी था जो रुहबा में रहता था और सुबह अंधेरे में अज़ान देता था और ये बांदी नहर से पानी लेने जाया करती और जब इस मुअज़्ज़िन के पास से गुज़र होता तो ये कहता कि ए फुलां! अल्लाह की कसम मैं तुम से मुहब्बत करता हूँ!

जब ये इसने कई दफा किया तो बांदी ने हज़रते अली को ये बात बता दी। हज़रते अली ने कहा कि अब की बार जब वो तुम्हें ऐसा कहे तो तुम भी कहना कि हाँ मैं भी तुमसे मुहब्बत करती हूँ, अब क्या चाहते हो? उस बांदी ने ऐसा ही कहा तो उस मुअज़्ज़िन ने कहा कि अब हम सब्र करेंगे हत्ता कि अल्लाह त'आला कोई फैसला ना फ़रमा दे और बेशक वही बेहतर फैसला फरमाने वाला है ये बात बांदी ने हज़रते अली को बतायी तो आपने उस मुअज़्ज़िन को बुलवाया और उसे खुश आमदीद कर के अपने पास बैठाया और पूछा कि क्या तुम्हें फुलानी से मुहब्बत है?

उस ने अर्ज़ किया : हाँ अमीरुल मुमिनीन!

आपने पूछा कि क्या किसी और को भी इल्म है?

अर्ज़ किया : अल्लाह की क़सम और किसी को इस का इल्म नहीं।

फिर आप ने बांदी उसे दे कर फरमाया कि इसे ले जाओ और ये अल्लाह ही के हुक्म से है और अल्लाह बेहतर हुक्म करता है।

(ذم الھوی لابن جوزی)

प्यार के मारों पर हमारे अकाबिरीन तरस खाते आये हैं, उन पे रहम करने का दर्स हमें सहाबा के अमल से मिलता है और जब कोई शरई वजह ना हो तो वहाँ प्यार करने वालों को मिला देना ही अच्छा है।

आज कल पहले जो ज़रूरी है कि खुद इस से बचें और अपनी औलाद को बचायें लेकिन जैसा कि ज़ाहिर है, ये ऐसा आम हो गया है कि बच्चे से बड़े, हर एक की कोई ना कोई कहानी है तो इस में ज़रूरी है कि उनकी मदद की जाए और वो इस तरह के उन्हें रिश्ते में बांध दिया जाए वरना फ़ितने सर उठायेंगे। इश्के मजाज़ी की तबाह कारियों पे बात करें,

ज़रूरी है पर एक तरफा ही बात करना और जो इस में पड़ चुके हैं उन्हें कोई राह ना दिखाना ये सहीह नहीं होगा वरना वो खुद अपनी राहें बना लेंगे जो शायद मज़ीद तबाहकारियों के सबब बन जाए।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

क्या छत फ़ाड़ कर मेराज के लिये सफ़र हुआ?

बहरुल उलूम, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अब्दुल मन्नान आज़मी रहीमहुल्लाहु त'आला से सवाल किया गया कि ज़ैद कहता है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु त'आला अलैहि वसल्लम को मेराज हुयी तो आप उम्मे हानी के घर में तशरीफ़ फरमा थे और आप छत फ़ाड़ कर अर्शे मुअल्ला पर गये, दरवाज़े से नहीं इसीलिये ज़ंजीर हिलने की कोई ज़रूरत नहीं और ये ज़ंजीर के हिलने वाली बात सहीह नहीं और अल्लाह त'आला से 90 बातें हुयीं जिन में से 60 आपने बयान की और 30 छुपा लीं।

आप जवाब में लिखते हैं कि : हदीस में जिबरीले अमीन के बारे में तो ये है कि जब वो मेराज के लिये आये तो दरवाज़े से नहीं बल्कि छत को फाड़ कर आये लेकिन हुज़ूर इसी फटी हुयी छत से अर्श पे गये ये बात रिवायत में नहीं बल्कि ज़ैद की अटकल पच्छू है।

मुल्ला अली क़ारी ने मिरक़ात में और शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहेलवी ने लम'आत में लिखा है कि : रिवायतों में इस मौके पर कई अल्फ़ाज़ आये हैं, किसी में है कि मैं हतीम में सो रहा था और बाज़ में है कि बैतुल्लाह के पास था और बाज़ में है कि मेरे घर की छत खुली और मैं मक्का में था और बाज़ में है कि शैबे अबी तालिब से मेराज हुयी और बाज़ में है उम्मे हानी के घर से, इन सब रिवायतों में तहक़ीक़ ये है कि ये सब जगहें क़रीब ही हैं। आप उम्मे हानी के घर थे, घर की छत खुली और इससे फरिश्ता उतरा फिर वो मुझे बैतुल्लाह शरीफ में ले आया।

देखिये यहाँ साफ तहरीर है कि घर से काबा शरीफ़ के पास लाये तो घर की छत फ़ाड़ के आने की क्या ज़रूरत थी। ज़ैद किसी रिवायत में ये नहीं दिखा सकता कि हुज़ूर छत फाड़कर अर्शे मुअल्ला के लिये गये।

आज लोग दीनी मज़हब से दूर हो गये हैं, बे पढ़े लिखे लोग दीनी मामलात में दखल देने लगे हैं। खुद भी गुमराह होते हैं और दूसरों को भी गुमराह करते हैं।

(فتاوی بحر العلوم، ج5، ص181، 182)

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

इमाम अबू हनीफ़ा कौन हैं? हम हनफी हैं।

ये बात हम अफसोस के साथ ही कह सकते हैं के कई हमारे सुन्नी भाइ बहनो को पता ही नहीं कि इमाम अबू हनीफ़ा किन का नाम है और इनसे हमें क्या निस्बत है! कई लोग जब उनसे पूछा जाए के आप हनफी हैं?

जवाब ये देते हैं कि पता नहीं क्योंकि उन्हें मालूम ही नहीं कि वो हनफी हैं हालाँकि देखने पे मालूम होता है कि वो हनफी फिक़्ह पर ही अमल करते हैं।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल की तरफ़ से सुन्नियो में रिश्ते के लिये जो ई-निकाह सर्विस शुरु की गयी है तो उस में प्रोफाइल बनाते वक़्त इसका भी सवाल किया जाता है की वो किस फिक़्ह के मानने वाले हैं तो कई लोगों का इस पे उल्टा सवाल आता है कि ये फिक़्ह क्या है और हनफी, शाफई, मालिकी, हम्बली क्या होता है?

इस तरह की ला इल्मी जब हमारे दरमियान मौजूद है तो फिर अफसोस का ही मक़ाम है।

हमें हर तरह से अपनी तारीख, अपने अकाबिरीन और अपने दीन से मुताल्लिक़ हर बात को आम करने की ज़रूरत है क्योंकि जब ये आम किया जाएगा तो तब्दीली खुद ब खुद नज़र आयेगी।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

एक आशिक़ को बचा के इंसानियत को बचा लिया

मक्का में एक ताजिर था जो ग़ुलामों और लौंडियों की तिजारत करता था।

(जैसा कि पहले रिवाज था ग़ुलाम बेचने ख़रीदने का) उस के पास एक ख़ूबसूरत लड़की थी जिसके हुस्न की बड़ी तारीफ़ हुई थी ये ताजिर उस को हज के मौसम में सामने लाता था और लोग उसे देखकर उस के लिए बड़ी क़ीमत देने को तैय्यार हो जाते मगर ये उस को फ़रोख़्त नहीं करता था और बहुत ज़्यादा क़ीमत मांगता था उसी दरमियान एक जवान लड़का जो इबादत-गुज़ार था उसने भी उस लड़की की नुमाइश होते हुए एक-बार देख लिया और वो उस के दिल में उतर गई। अब ये उसे देखने आया करता और देखकर लौट जाता, फिर उस लड़की को पर्दा करवा दिया गया तो ये बहुत ग़मगीन और सख़्त बीमार हो गया और उसका जिस्म पिघलने लगा चुनांचे ये लोगों से अलग-थलग रहने लगा और इस की ये मुसीबत हज के मौसम तक चलती (यानी साल भर इस हाल में रहता) फिर उसे नुमाइश वाले दिनों में देख के थोड़ा सुकून पाता।

ये जवान इसी तरह काफ़ी दुबला पतला हो गया और पिघलता रहा तो इस से हज़रते मूसा मक्की रहीमहुल्लाह त'आ़ला ने वजह पूछी, उसने पहले मना किया फिर बता दिया तो आपने उस पे तरस खाया कि ये बेचारा कितनी बड़ी मुसीबत में फँस कर किस हालत को पहुंच गया है तो मै इस लड़की के मालिक के पास गया और इस से बातचीत करता रहा यहाँ तक कि उस नौजवान की तकलीफ़ का इज़हार कर दिया और अब जो उस की हालत थी वो भी बताई और वो उस वक़्त मौत की हालत को पहुँच चुका था।

उस ताजिर ने कहा कि मेरे साथ चलें ताकि मै उसे देख सकूँ फिर हम दोनों उस के पास आए।

जब ताजिर ने उस की हालत देखी तो रहा ना गया और फिर फिर हुक्म दिया कि लड़की को बनाव सिंगार के साथ तैय्यार किया जाए फिर वो उसे बाज़ार में ले गया और कहा ए लोगों! गवाह हो जाओ मैंने ये लौंडी इस नौजवान को हदिया में दिया उस के इवज़ जो अल्लाह त'आ़ला के पास है फिर उस नौजवान से कहा कि इसे मेरी तरफ़ से हदिया क़ुबूल करो और साथ में उसने जो ज़ेवर वग़ैरा पहने हैं वो सब भी।

लोगों ने कहा कि तुम्हें इतना ज़्यादा माल पेश किया जा रहा था इस लड़की के लिए और तुमने इसे ऐसे ही हदिया कर दी!

उस ताजिर ने कहा कि, इस नौजवान (जिसकी मौत का अंदेशा था) को ये लड़की देकर मैंने (इस की जान बचा के) तमाम रू-ए-ज़मीन के लोगों को ज़िंदगी दी है क्योंकि अल्लाह त'आला फ़रमाता है:

مَنْ اَحْيَاهَا فَكَاَنَّمَاۤ اَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا

(المائدہ:32)

जिसने किसी एक नफ़्स की ज़िंदगी बचाई उसने तमाम इन्सानों की ज़िंदगी बचाई।

(ذم الھویٰ لابن جوزی رحمہ اللہ تعالی، ملخصا)

आप चाहे जिस तरह इन मु'आमलात को देखते हो पर ये बात सच है कि जब कोई दिल के हाथों मजबूर होता है तो फिर समझने समझाने वाली बातें बहुत कम रह जाती हैं।

ऐसे में हमारे अकाबिरीन ने ऐसे ग़म के मारों पे तरस खा कर उन्हें ज़िंदगी देने की कोशिश की है लिहाज़ा आज भी ज़रूरत है कि ऐसे मु'आमलात में हालात के मारों पर रहम करें ताकि किसी की जान पर ना बन आए।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

होली

आप इस नाम से बहुत ही अच्छे से वाकिफ होंगे। एक गैर इस्लामी त्यौहार जिस में रंग, गुलाल, मिट्टी और पानी से खेल खेला जाता है, जिसे होली कहते हैं। यूनिटी के वायरस में घिरे हुये कुछ मुसलमान इसी कीचड़, पानी, रंग और गुलाल का खेल बड़े ही शौक़ से खेलते हैं और जिहालत की सारी हदें पार कर के इतना तक कहते हैं कि जब कोई ग़ैर शख्स ईद मना सकता है तो क्या हम होली नहीं मना सकते।

हिंदुस्तान के शहर देवा शरीफ में हाजी सय्यिद वारिस अली रहमतुल्लाह अलैह के रोज़े के सामने भी ये ड्रामा बड़ी धूम धाम से किया जाता है। लोग भी बहुत दूर दूर से इस होली को मनाने के लिये सफ़र करके आते हैं। शायद उनको लगता है कि अल्लाह के वली के आस्ताने में होली खेली जा रही है तो जाइज़ ही होगी। तो हम आपको बता दें कि नाजाइज़ कम अगर्चे किसी वली के आस्ताने पर हो, वो नाजाइज़ ही होता है।

होली खेलना हराम, हराम, हराम है।

(فتاوی شارح بخاری، فتاوی بریلی شریف، فتاوی تاج الشریعہ و دیگر کتب فتاوی)

हर साल होली आने के कुछ दिन पहले ही मुबारकबाद का सिलसिला शुरू हो जाता है और अब तो ये सब आम हो गया है। और क्यों ना हो कि यूनिटी के नाम पर सब चलता है। कोई दीनी इंसान यदि ऐसे लोगों की इस्लाह करे और उनको बताये की होली मनाना शरीअते इस्लामिया के हुदूद के बाहर है तो बताने वाले के लिये ही मुसीबत हो जाती है। हम आपको बता दें कि किसी भी गैर इस्लामी त्योहार को अच्छा समझना और इनकी ताज़ीम में मुबारकबाद देना असद हराम व कुफ्र है।

(فتاوی رضویہ، ج14)

यूनिटी की बीमारी में बीमार मुसलमानों से हम कहना चाहते हैं कि साँसों के चलते होश में आ जाएं और इन सब कामों से तौबा कर अपने ईमान को सलामत रखें। शरीअत के हुक्म को पीठ पर ना रखें बल्कि अपने सरों पर रखें। बेशक हमारा दीन चमकता हुआ व रौशन है। हर मुसलमान के लिये शरीअते इस्लामिया में जाइज़ व नाजाइज़ की लकीर है जिस का हमें खयाल रखना चाहिये। अल्लाह पाक मुसलमानों के ईमान को सलामत रखे व गैरों के फेल से मुसलमानों को महफूज़ रखे।

मुल्क के लिये लड़ने वाले मुसलमान शहीद?

एक सवाल किया गया कि ज़ैद इंडियन आर्मी में कमांडर है और उसके दस्ते में सब खुश अक़ीदा मुसलमान हैं तो अगर वो पाकिस्तान से जंग करते हुये मारे जाएं तो उन पर शहीद का हुक्म नाफिज़ होगा या नहीं?

इसके जवाब में ताजुल फुक़हा, अल्लामा मुफ्ती अख्तर हुसैन क़ादरी रहीमहुल्लाहू त'आला फरमाते हैं कि शरीअत में शहीद वो है जो अल्लाह के दीन की सरबुलंदी के लिये जंग करे और इस राह में मार डाला जाए चुनांचे अल्लामा बैज़ावी लिखते हैं :

الشهداء الذين ادرء بهم
الحرص الطاعة والحد فى اظهار
الحق حتى بذلوا مهجهم فى اعلاء
كلمة الله

और अल्लामा शैखज़ादा अलैहिर्रहमा तहरीर फरमाते हैं :

الشهيد من قام بشهادة الحق و
العمل به الى ان قتل فى سبيل
الله

(تفسیر بیضاوی، ج۲، ص۱۴۸)

इस वज़ाहत से मालूम हुआ कि जो मुसलमान पाकिस्तान वग़ैरह ममालिक से जंग करते हुये मारे जाएं वो शर'अन शहीद नहीं हैं कि वो लोग इस्लाम की सर बुलंदी के लिये नहीं लड़ते हैं।

(فتاوی علیمیہ، ج1، ص320)

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशियल

सुल्तान सलाहुद्दिन अय्युबी और गुस्ताख़े रसूल

इस्लामी तारीख के अज़ीम हीरो सुल्तान सलाहुद्दिन अय्युबी ने कभी किसी जंगी क़ैदी को सज़ा नहीं दी।

आप ऐसे शफीक और रहीम थे कि दुश्मनों के लिए भी दिल में नर्मी थी।

आप ने युरोप के एक शेहज़ादे को अपनी तलवार से काटा था क्युंकि उस्ने नबी ए करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की क़ब्र उखाड़ने और मदीने की इंट से इंट बजाने की बात की थी।

ग़ाज़ी सलाहुद्दीन अय्युबी ने कहा था की अगर मैं उसे अपनी तलवार से मौत के घाट ना उतारता तो फिर मैं अपने आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को रोजे मेहशर क्या मूँह दिखाऊँगा?

(ہفت روزہ ایشیا، لاہور، جنوری 2011 بہ حوالہ کارآمد تراشے)

अब्दे मुस्तफा ऑफिशियल

झूटे तबीब मुतवज्जेह हों

हदीसे पाक : "जो तकल्लुफ़न इलाज करे और उसे इल्मे तिब्ब ना हो तो वो ज़ामिन है।"

नबी -ए- करीम के इस फ़रमान की वज़ाहत ये है कि जिस ने तिब्ब के उसूल व ज़वाबित ना पढ़े हों और वो लोगों के सामने खुद को तबीब ज़ाहिर करे और उस के इलाज से कोई मर जाए या मरीज़ को किसी क़िस्म का नुक़्सान पहुँचे तो वो जाली तबीब दिय्यत का ज़ामिन है।

ख्वाह इन्सान हो या जानवर इलाज हर जानदार की ज़रूरत है चूँकि इन्सान मख्लूक़ात में अफ़ज़ल है इसीलिये उस की इज़्ज़त और तकरीम की अहमियत भी उतनी ही ज़्यादा बयान की गयी है और इंसानी जान की सिह्हत और उस की हिफ़ाज़त के लिये ज़रूरी इक़्दाम करने को ज़्यादा अहम क़रार दिया है। इन्सानी सिह्हत की हिफाजत के लिये इलाज की सहूलत होने के साथ मुआलिज का माहिर होना भी निहायत ज़रूरी है।

माल व दौलत की लालच भी ऐसा करने पर उभारती है बिल खुसूस वो पस मांदा या तरक़्क़ी पज़ीर इलाक़े जहाँ अस्पताल की सहूलत मौजूद नहीं या बहुत दूर दूर है तो ऐसी सूरत में इस तरह के मक़ामात सोने की चिड़िया साबित होते हैं, ऐसे लोग उन मक़ामात पर अपनी नातजुर्बा कारी की वजह से कई जानों की ज़्या'अ का सबब बनते हैं।

(ابن ماجہ،4،حدیث،3466)

बाज़ अफ़राद को हर काम में कूदने और मुफ्त के मश्वरे देने का शौक़ होता है ऐसे लोग अपनी आदत से मजबूर होकर हर बीमारी का इलाज बताते फिरते हैं और उस तरीक़ा -ए- इलाज को अपनाने पर इसरार भी करते हैं कभी-कभी तो ऐसे टोटके भी बताते हैं जो मर्ज़ भगाने के बजाए उस की शिद्दत बढ़ा देता है और उन के मश्वरे के गलत होने का अंदाज़ा वक़्त गुज़रने के बाद होता है। ऐसे मश्वरे तदबीर के तजवीज़ कर्दा इलाज से वही नजात पा सकता है जिसकी अक़्ल हाज़िर और जिंदा हो।

(اسعاف الحاجۃ،579،تحت الحدیث،3466)

बाज़ लोग मरीज़ से बुग्ज़ व कीना की वजह से उसे गलत दवाईयाँ बता देते हैं और दवाइ के उल्टे असारात देख कर खुश होते हैं।

बाज़ लोगों को इन्सानो पर तजुर्बे करने का शौक़ होता है उसी शौक़ को वो यू पूरा करते हैं कि तरह-तरह दवाइयों के फवाइद व नुक़्सान जानने के लिये आम सीधे सादे और भोले भाले लोगों पर तजुर्बा करते हैं उमूमन मेडिकल स्टोर वालों से लोग बीमारी बता कर दवा तलब करते हैं वो भी तजुर्बे के शौक़ मैं डॉक्टर की हिदायत के बगैर दवा दे देते हैं जिस के नताइज तक़्लीफ में इज़ाफे और जान जाने जैसी भयानक सूरत में निकलते हैं।

झूटे तबीब दर-असल बे रहमी इन्तिक़ामी मिजाज़ और इस तरह के कई वुज़ुहात के पैदावर होते हैं लिहाज़ा हमें ये याद रखना चाहिये कि इस्लाम हमें रहम दिली का हुक़्म देता है।

चुनाँचे हदीसे क़ुदसी मैं है : अगर तुम मेरी रहमत चाहते हो तो मेरी मख्लूक़ पर रहम करो।

नबी -ए- करीम सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम ने फ़रमाया : बेशक़ अल्लाह पाक अपने रहम करने वाले बंदो पर ही रहम फ़रमाता है। इस्लाम हमें बेहसी व बेरहमी से बचाता है जैसा कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया जो लोगों पर रहम नहीं करता अल्लाह पाक उस पर रहम नहीं फ़रमाता।

(مسلم، ص975، حدیث2318)

मरीज़ो पर रहम का तक़ाज़ा ये है कि हम किसी भी तरह गलत इलाज बताने के बजाए माहिर डॉक्टर से रुजू करने का मश्वरा दें इस सिलसिले में मरीज़ पर आने वाली माली दुश्वारियों को भी हस्बे तौफ़ीक़ दूर करने की कोशिश करे और ये सब करते हुये ऐसे अल्फाज़ इस्तिमाल करने से बचे जो मरीज़ को घायल कर दें बल्कि वो लहजा इख्तियार करें जो उसे इलाज का काइल और डॉक्टर की जानिब माइल कर सके हमारा ये रवैया झूटे तबीबों में कमी का सबब बनेगा। इंशा अल्लाह

(ماخوذ، ماہنامہ فیضانِ مدینہ، دعوتِ اسلامی)

अब्दे मुस्तफ़ा दिलबर राही अस्दक़ी

नक़्शे नालैन पे नाम

नबी -ए- करीम सल्लल्लाहु त'आला अलैही वसल्लम के नालैन की मिस्ल एक नक़्शा बनाया जाता है जिस पर नाम भी लिखा जाता है और अरबी अश'आर हत्ता कि क़ुरआनी आयत भी लिखी जाती हैं इस पर कुछ लोगों को ऐतराज़ होता है कि ये दुरुस्त नहीं बल्कि बे अदबी है हालाँकि ऐसा नहीं है।

फैज़े मिल्लत, हज़रते अल्लामा फैज़ अहमद उवैसी रहीमहुल्लाहू त'आला लिखते हैं कि :

(नक़्शे नालैन पर आयत लिखना) जाइज़ है, इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरेल्वी रहीमहुल्लाहू त'आला लिखते हैं कि बिस्मिल्लाह शरीफ़ इस पर लिखने में कुछ हरज नहीं अगर ये ख्याल कीजिये की नाले मुक़द्दस क़त'अन ताजे फ़र्क़ अहले ईमान है मगर अल्लाह का नाम व कलाम हर शय से अजल व आज़म व अरफा व आला है, यूँही नक़्शे नाले अक़्दस में भी एह्तिराज़ चाहिये तो ये क़यास म'अल फारिक़ है, अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु त'आला अलैही वसल्लम से अर्ज़ की जाती कि नामे इलाही या बिस्मिल्लाह शरीफ़ हुज़ूर की नाल पर लिखी जाए तो पसंद ना फ़रमाते मगर इस क़द्र ज़रूरी है कि नाल ब हालते इस्तेमाल व तिमसाल मह्फ़ूज़ अनिल इब्तिज़ाल में तफावुत बदीही है और आमाल का निय्यत पर है।

अमीरुल मोमिनीन, फारुक़ -ए- आज़म ने जानवराने सदक़ा की रानो पर अल्लाह का नाम दाग फरमाया था हालाँकि उनकी रानें बहुत महले बे एह्तियाती हैं बल्कि सुनन दारमी में है :

सईद बिन जुबैर फरमाते हैं कि मै इब्ने अब्बास रदिअल्लाहो त'आला अन्हुमा के पास बैठता और (तहसीले इल्म के लिये फिक्री इल्मी बातें) रजिस्टर पर लिखता, जब वो खत्म हो जाता तो फिर मैं अपने दोनो जूती के तलवो पर लिखता।

(فتاوی اویسیہ، ج1، ص104، 105)

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

रहम की अपील

इल्म के बग़ैर बाज़ (तक़रीर) करना हराम है। हदीस शरीफ़ में है कि "एक ज़माना ऐसा आयेगा कि इल्म वाले कम होंगे और ख़तीब कसरत से होंगे।"

(المعجم الکبیر للطبرانی، حدیث 3041)

आज अनपढ़ लोग उलमा की मुखालिफ़त करते हैं और महज़ किसी सुन्नते ज़ाइदा के तर्क पर उलमा को बे अमल कहने लगते हैं। नबी -ए- करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि तीन आदमियों की बेहुरमती सिर्फ़ मुनाफ़िक़ ही करता है। बूढ़ा मुसलमान, आलिमे दीन और आदिल हुक्मरान।

(مجمع الزوائد، ج1، ص127)

ये लोग आवाम में तशद्दुद फैला रहें हैं और हर किसी को अपने ही मशाइख़ और असातिज़ा का पाबंद देखना चहते हैं। अगर नीम हकीम अपने अपने घरों को चले जाएं तो मरीज़ खुद बखुद शिफा पा जाएगा। सहाबा -ए- किराम अलैहिमुर्रिदवान जाहिल मुबल्लिगीन को मस्जिद से निकाल दिया करते थे। हज़रते सैय्यिदुना अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम जब बसरा में तशरीफ लाये तो आप ने बसरा के तमाम खतीबों का इम्तिहान लिया और नतीजे में हज़रते हसन बसरी रहमतुल्लाह त'आला अलैह के सिवा तमाम मुबल्लिगीन को तब्लीग से रोक दिया और उनके मिंबर तोड़ कर फेंक देने का हुक्म दिया।

(تذکرۃ الاولیا صفحہ 13)

लिहाज़ा इस नाज़ुक काम में हाथ डालने से पहले अपने गिरेबान में झाँक लेना ज़रूरी है।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

हमारी किताबें हिंदी में

(1) बहारे तह़रीर - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इल्मी तहक़ीक़ी और इस्लाही तहरीरों पर मुश्तमिल एक गुलदस्ता जिसके अब तक 14 हिस्से रिलीज़ हो चुके हैं, हर हिस्से में 25 तहरीरें हैं जो मुख्तलफ़ मौज़ूआत (टॉपिक्स) पर हैं।

(2) अल्लाह त'आला को ऊपरवाला या अल्लाह मियाँ कहना कैसा? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में कई हवालों से साबित किया गया है कि अल्लाह त'आला को ऊपर वाला या अल्लाह मियाँ कहना जाइज़ नहीं है।

(3) अज़ाने बिलाल और सूरज का निकलना - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में एक वाक़िए की तहक़ीक़ पेश की गई है जिस में हज़रते बिलाल के अज़ान ना देने पर सूरज ना निकलने का ज़िक्र है।

(4) इश्क़े मजाज़ी (मुंतख़ब मज़ामीन का मजमुआ) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में कई अहबाब के मज़ामीन शामिल किये गए हैं जो इश्के मजाज़ी के ताल्लुक़ से हैं, इश्के मजाज़ी के मुख़्तलफ़ पहलुओं पर ये एक हसीन संगम है।

(5) गाना बजाना बंद करो, तुम मुसलमान हो! - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस मुख़्तसर से रिसाले में गाने बजाने की मज़म्मत पर कलाम किया गया है और गानों के कुफ्रिया अशआर बयान किये गए हैं जिसे पढ़ कर कई लोगों ने गाने बजाने से तौबा की है।

(6) शबे मेराज गौसे पाक - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में एक मशहूर वाक़िए की तहक़ीक़ बयान की गई है जिस में हज़रते ग़ौसे आज़म का शबे मेराज हमारे नबी अलैहिस्सलाम से मिलने का ज़िक्र है।

(7) शबे मेराज नालैन अर्श पर - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में एक वाक़िए की तहक़ीक़ पेश की गई है जिस में मेराज की शब हुज़ूर नबी -ए- करीम अलैहिस्सलाम का नालैन पहन कर अर्श पर जाने का ज़िक्र है।

(8) हज़रते उवैस क़रनी का एक वाक़िया - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में हज़रते ओवैस क़रनी के अपने दंदान शहीद कर देने वाले वाक़िए की तहक़ीक़ बयान की गई है और साथ ये भी कि अल्लाह के आख़िरी रसूल अलैहिस्सलाम के दंदान शहीद हुए थे या नहीं और हुए तो उसकी कैफ़ियत क्या थी और कई तहक़ीक़ी निकात शामिले बयान हैं।

(9) डॉक्टर ताहिर और वक़ारे मिल्लत - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला मज्मुआ है उन फ़तावा का जो हज़रते अल्लामा मुफ़्ती वक़ारुद्दीन क़ादरी अलैहिर्रहमा ने डॉक्टर ताहिरुल क़ादरी के लिये लिखे हैं, ये फ़तावा डॉक्टर ताहिरुल क़ादरी की गुमराही को बयान करते हैं।

(10) ग़ैरे सहाबा में रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का इस्तिमाल - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में कई दलाइल से साबित किया गया है कि सहाबा के अलावा भी तरद्दी (यानी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु) का इस्तिमाल किया जा सकता है।

(11) चंद वाक़ियाते कर्बला का तहक़ीक़ी जाइज़ा - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

वाक़ियाते कर्बला के हवाले से अहले सुन्नत में बेशुमार वाक़ियात ऐसे आ गए हैं, जो शिओं की पैदावार हैं, इस रिसाले में हमने चंद वाक़ियात की तहक़ीक़ पेश की है जो कि अपनी नोइयत का मुन्फ़रिद काम है, इस तहक़ीक़ी रिसाले में कई इल्मी निकात मरक़ूम हैं।

(12) बिन्ते हव्वा (एक संजीदा तहरीर) कनीज़े अख़्तर

औरत की ज़िंदगी में पैदाइश से ले कर निकाह और फिर बादहू के मामलात की इस्लाह के लिये इस रिसाले को एक अलग अंदाज़ में लिखा गया है।

(13) सेक्स नॉलेज (इस्लाम में सोहबत के आदाब) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस्लाम में जिंसी ताल्लुक़ात और इस हवाले से जदीद मसाइल पर ये रिसाला बड़े ही आम फ़हम अंदाज़ में लिखा गया है और आसान होने के साथ-साथ ये रिसाला दलाइल से मुज़य्यन भी है।

(14) हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के वाक़िए पर तहकी़क़ - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के मुताल्लिक़ मशहूर वाक़ियात की तहक़ीक़ पर ये रिसाला लिखा गया है, कई हवालों से अस्ल रिवायत और उनकी कैफ़ियत को अम्बिया की अज़मत को मद्दे नज़र रखते हुए बयान किया गया है।

(15) औरत का जनाज़ा - जनाबे ग़ज़ल साहिबा

औरत के जनाज़े को कौन कौन देख सकता है? क्या शौहर काँधा नहीं दे सकता? और ऐसे कई सवालात के जवाब आपको इस रिसाले में मिलेंगे।

(16) एक आशिक़ की कहानी अल्लामा इब्ने जौज़ी की ज़ुबानी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

एक आशिक़ की बड़ी दिलचस्प कहानी है जिस में मज़ाह है, तफ़रीह है, सबक़ है और इबरत है। इस वाक़िए को अल्लामा इब्ने जौज़ी की किताब "ज़म्मुल हवा" से लिया गया है।

(17) आईये नमाज़ सीखें (पार्ट 1) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस किताब में नमाज़ पढ़ने और इससे मुताल्लिक़ ज़्यादा से ज़्यादा मसाइल को जमा करने की कोशिश की गई है, इस्तिलाह़ात को आसान अंदाज़ में बयान किया गया है, इस के अगले हिस्सों पर भी काम जारी है।

(18) क़ियामत के दिन लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जाएगा? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में इस बात की तफ़्सील बयान की गई है कि क़ियामत के दिन लोगों को माँ के नाम के साथ पुकारा जाएगा या बाप के नाम से।

(19) शिर्क क्या है? - अल्लामा मुहम्मद अहमद मिस्बाही

शिर्क के मौज़ू पे एक बेहतरीन किताब है जिस में शिर्क का असल मफ़हूम बयान किया गया है।

(20) इस्लामी तअ़लीम (हिस्सा अव्वल) - अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अ़मजदी रहमतुल्लाह अलैह

ये किताब इस्लाम की बुनियादी मालूमात पर मुश्तमिल है, बच्चों को पढ़ाने के लिये ये एक अच्छी किताब है।

(21) मुहर्रम में निकाह - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में बयान किया गया है कि माहे मुहर्रम में भी निकाह जाइज़ है और इसे नाजाइज़ कहना बिल्कुल गलत है, मुहर्रम में ग़म मनाना ये कोई इस्लामी रस्म नहीं और चाहे घर बनाना हो या मछली, अंडा और गोश्त वग़ैरह खाना सब मुहर्रम में जाइज़ है।

(22) रिवायतों की तहकी़क़ (पहला हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला अहले सुन्नत में मशहूर रिवायतों की तहक़ीक़ पर मुश्तमिल है, इस में रिवायतों की तहक़ीक़ बयान की गई है, सहीह रिवायतों की सिह्हत पर और बातिल रिवायतों के मौज़ू व बेअस्ल होने पर दलाइल पेश किये गये हैं, इस के और भी हिस्सों पर काम जारी है।

(23) रिवायतों की तहकी़क़ (दूसरा हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिवायतों की तहक़ीक़ का दूसरा हिस्सा है, इस के और भी हिस्सों पर काम जारी है।

(24) ब्रेक अप के बाद क्या करें? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला उन नौजवानों के लिये लिखा गया है जो इश्के मजाज़ी में धोखा खा कर अपनी ज़िंदगी के सफ़र को जारी रखने के लिये राह तलाश कर रहे हैं।

(25) एक निकाह ऐसा भी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये एक सच्ची कहानी है, एक निकाह की कहानी, इस में जहाँ इस्लामी तरीके से निकाह को बयान किया है वहीं इस पर अमल की कोशिश भी की गई है।

है तो ये एक कहानी पर इस में आप तहक़ीक़ी निकात भी मुलाहिज़ा फ़रमाएंगे।

(26) काफ़िर से सूद - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस रिसाले में आप पढ़ेंगे कि एक काफ़िर और मुसलमान के दरमियान सूद की क्या सूरतें हैं? और साथ ही लोन, बैंक और पोस्ट इंटरेस्ट पर उलमा -ए- अहले सुन्नत की तहक़ीक़ भी शामिले रिसाला है।

(27) मैं खान तू अंसारी - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

इस्लाम में क़ौम, ज़ात और बिरादरी वग़ैरह की अस्ल पर ये एक तहक़ीक़ी किताब है, इस में मसवात को क़ाइम करने की तरग़ीब दिलाई गई है, कुफ़ू के मसअले पर तहक़ीक़ी मवाद भी शामिले किताब है।

(28) रिवायतों की तहक़ीक़ (तीसरा हिस्सा) - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिवायतों की तहक़ीक़ का तीसरा हिस्सा है, इस के 2 हिस्सों का ज़िक्र हम कर आये हैं, इसके चौथे हिस्से पर काम जारी है।

(29) जुर्माना - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला माली जुर्माने के मुताल्लिक़ लिखा गया है, माली जुर्माना फ़िक़्हे हनफ़ी में जाइज़ नहीं है और इसे दलाइल से साबित किया गया है।

(44) ला इलाहा इल्लल्लाह, चिश्ती रसूलुल्लाह? - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये रिसाला औलिया की एक खास हालत के बयान में है जिसे "सुकर" और "शत्हिय्यात" वग़ैरह से ताबीर किया जाता है।

इस ताल्लुक़ से अहले सुन्नत के मुअतदिल मौक़िफ़ को दलाइल के साथ बयान किया गया है।

ये रिसाला उनके लिये दावते फिक्र है जो इफ़रातो तफ़रीत के शिकार हैं।

(31) हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान बहारे शरीअत से - अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी

ये रिसाला औरतों के मख़सूस मसाइल पर मुश्तमिल है।

(32) रमज़ान और क़ज़ा -ए- उमरी की नमाज़ - अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

ये मुख़्तसर सी तहक़ीक़ इस बयान में है कि क्या रमज़ान के आखिरी जुमुआ में किसी नमाज़ के पढ़ने से सारी क़ज़ा नमाज़ें माफ़ हो जाती हैं? इस तरह की रिवायतों की क्या अस्ल है?

(33) 40 अहादीसे शफ़ाअत - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी

इस रिसाले में शफ़ाअते मुस्तफ़ा के हवाले से 40 हदीसें लिखी गई हैं।

(34) बीमारी का उड़ कर लगना - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी

ये किताब इस बात की तहक़ीक़ पर है कि बीमारी उड़ कर लग सकती है या नहीं यानी किसी एक को हुआ मर्ज़ किसी दूसरे में मुंतक़िल हो सकता है या नहीं।

(35) ज़न और यक़ीन - आला हज़रत, इमाम अहमद रज़ा बरेलवी

ये रिसाला ज़न और यक़ीन के अहकाम पर लिखा गया है, इल्मे फ़िक़्ह पढ़ने वालों के लिये इस में कई इल्मी निकात हैं जिनसे वस्वसों को दूर किया जा सकता है।

(36) ज़मीन साकिन है - आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी

इस किताब में साबित किया गया है कि ज़मीन हरकत नहीं करती बल्कि ये साकिन (ठहरी हुई) है।

(37) अबू तालिब पर तहक़ीक़ - आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा खान बरेलवी

इस किताब में अबू तालिब के ईमान के मसअले पर जम्हूर अहले सुन्नत का मौक़िफ़ पेश किया गया है, यही मौक़िफ़ तहक़ीक़ से साबित है कि अबू तालिब ने इस्लाम कुबूल नहीं किया था।

(38) क़ुरबानी का बयान बहारे शरीअत से - अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी

इस रिसाले में क़ुरबानी के फ़ज़ाइल और फ़िक़्ही मसाइल हैं जो कि बहारे शरीअत से माख़ूज़ हैं।

(39) इस्लामी तालीम (पार्ट 2) - अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी

ये इस्लामी तालीम का दूसरा हिस्सा है ये किताब इस्लाम की बुनियादी मालूमात पर मुश्तमिल है, बच्चों को पढ़ाने के लिये ये एक अच्छी किताब है।

(40) सफ़ीना -ए- बख़्शिश - ताजुश्शरिया, अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा खान

ये किताब हुज़ूर ताजुश्शरिया, अल्लामा मुफ़्ती अख़्तर रज़ा खान बरेलवी के कलाम का मज्मूआ है।

ABOUT US

Abde Mustafa Official is a team from **Ahle Sunnat Wa Jama'at** working since 2014 on the Aim to propagate **Quraan and Sunnah** through electronic and print media.

We are :

blogging, publishing books and pamphlets in multiple languages on various topics, running a special matrimonial service for Sunni Muslims.

Visit our official website :

www.abdemustafa.in

about thousands of articles & 200+ pamphlets and books are available in multiple languages.

E Nikah Matrimony

if you are searching a Sunni life partner then **E Nikah** is a right platform for you.

Visit **www.enikah.in**

Or join our Telegram Channel

t.me/enikah (search "E Nikah Service" in Telegram)

Follow us on Social Media Networks :

/abdemustafaofficial

For more details WhatsApp **+91 91025 20764**

OUR BRANDS :

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

enikah E NIKAH MATRIMONY SERVICE